पृथ्वी दिवस विशेष: पृथ्वी की चिता अब नहीं तो कभी नहीं

संदर्भ

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी विश्वभर में 22 अप्रैल को पर्यावरण चेतना जाग्रत करने के लिये **पृथ्वी दिवस** मनाया गया। लेकिन अब ऐसा लगता है कि यह महज औपचारिकता से ज़्यादा कुछ नहीं है। पृथ्वी के पर्यावरण के बारे में लोगों को जागरूक और प्रेरित करने के लिये पृथ्वी दिवस मनाया जाता है। ग्लोबल वार्मिंग के रूप में जो परिदृश्य आज हमारे सामने है, ऐसा लगातार बना रहा तो एक दिन ऐसा आएगा जब पृथ्वी से जीव–जंतुओं व वनस्पतियों का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

क्यों मनाया जाता है पृथ्वी दिवस?

- पृथ्वी एक बहुत व्यापक शब्द है जिसमें जल, हरियाली, वन्य-प्राणी, प्रदूषण और इससे जुड़े अन्य कारक शामिल हैं। पृथ्वी को बचाने का आशय है इसकी रक्षा के लिये पहल करना।

लोगों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से पूरे विश्व में 22 अप्रैल, 1970 को पहली बार पृथ्वी दिवस का आयोजन किया गया था। इसमें कोई दो राय नहीं कि नित सामने आ रही विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के लिये पर्यावरण संरक्षण पर ज़ोर देने की आवश्यकता है।

बढ़ती जनसंख्या का दबाव

वर्तमान समय में पृथ्वी के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती बढ़ती जनसंख्या है। पृथ्वी की कुल आबादी आज साढ़े सात अरब से अधिक हो चुकी है। यह प्रकृति का सिद्धांत है की आबादी का विस्फोट उपलब्ध संसाधनों पर नकारात्मक दबाव डालता है, जिससे पृथ्वी की नैसर्गिकता प्रभावित होती है। बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये पृथ्वी के दोहन (शोषण) की सीमा आज चरम पर पहुँच चुकी है। जलवायु परिवर्तन के खतरे को कम-से-कम करना दूसरी सबसे बड़ी चुनौती है। विश्व में बढ़ती जनसंख्या तथा औद्योगीकरण एवं शहरीकरण में तेज़ी से वृद्धि के साथ–साथ ठोस अपशिष्ट पदार्थों द्वारा उत्पन्न **पर्यावरण प्रदूषण** की समस्या विकराल होती जा रही है।

एन्थ्रोपोसीन युग में हुई है सर्वाधिक क्षति

अब यह स्पष्ट हो चुका है कि **एन्थ्रोपोसीन (Anthropocene)** युग में पर्यावरण को सर्वाधिक क्षति पहुँची है। आज दुनिया अपनी निर्धारित सीमाओं के भीतर रहने की क्षमता तेज़ी से खोती जा रही है। स्वास्थ्य से जुड़े स्थानीय संकट की खबरें भी अब लगातार सामने आती रहती हैं। ऐसा पर्यावरण के हमारे कुप्रबंधन और जलवायु परिवर्तन के असर के वैश्विक अस्तित्ववादी संकट के कारण हो रहा है।

हम सभी हालात बदलना चाहते हैं। पर्यावरण की साफ-सफाई और संरक्षण में योगदान देना चाहते हैं। हम जिस हवा में साँस लेते हैं वह इतनी दूषित हो चुकी है कि प्रतिवर्ष लाखों लोग इसकी वज़ह से काल के गाल में समा जाते हैं। हमारी नदियाँ कूड़े-कचरे और गंदे पानी से खत्म हो रही हैं। हमारे वनों पर भी खतरा मंडरा रहा है। हम जानते हैं कि अपना पर्यावरण बचाने के लिये काफी कुछ करना होगा, अन्यथा पृथ्वी का अस्तित्व ही दाँव पर लगा रहेगा। हम सभी इन बेहद महत्त्वपूर्ण बदलावों का हिस्सा बनना चाहते हैं।

मनुष्य ही ज़िम्मेदार है

- पृथ्वी हमारे अस्तित्व का आधार है, जीवन का केंद्र है। यह आज जिस स्थिति में पहुँच गई है, उसे वहाँ पहुँचाने के लिये मनुष्य ही ज़िम्मेदार हैं। आज सबसे बड़ी समस्या मानव का बढ़ता उपभोग है, लेकिन पृथ्वी केवल उपभोग की वस्तु नहीं है। वह मानव जीवन के साथ-साथ असंख्य वनस्पतियों-जीव-जंतुओं की आश्रयस्थली भी है।

हम इन सब के बारे में अच्छी तरह से जानते हैं, लेकिन सवाल यह है कि किया क्या जा सकता है? क्या कुछ ऐसा है जो हम मनुष्य, स्कूल, कॉलेज, कॉलोनी एवं समाज के तौर पर सामूहिक रूप से कर सकते हैं? हम कैसे अपना योगदान दे सकते हैं?

इसमें मुश्कलि कुछ भी नहीं और हम सभी बड़ी आसानी से ऐसा कर सकते हैं। महात्मा गांधी का एक प्रसद्धि कथन है... “हम दुनिया में जो भी बदलाव लाना चाहते हैं, उसे पहले हमें खुद पर लागू करना चाहयि।” हमें आज यही करने की ज़रूरत है। हम मनुष्यों की जीवनशैली ने पर्यावरण को लगभग बर्बाद कर दयिा है। हमारी गतविधियिों और उन्हें कार्यरूप देने के तरीकों का अंतर बेहद महत्त्वपूर्ण होता है। इसीलयि बदलाव की दशिा में सबसे पहला कदम यह होना चाहयि कहिम अपने कार्यों के प्रतसिचेत और जागरूक हों। हमें बदलावों को आत्मसात करना होगा।

हरति स्कूल कार्यक्रम

पर्यावरण संरक्षण के लयि काम करने वाली अग्रणी भारतीय संस्था सेंटर फॉर साइंस एंड एन्वायरनमेंट (CSE) ने एक **हरति स्कूल कार्यक्रम** तैयार कयिा है, जसिमें स्कूल पर्यावरणीय बदलावों पर भाषण नहीं देते, बल्कि उनका पालन करते हैं। इस कार्यक्रम में छात्र और शक्षिक मलिकर अपने स्कूल का **पर्यावरणीय बेंचमार्क** तय करते हैं। जैसे- वे कतिना पानी, बजिली या वाहन इस्तेमाल करते हैं और कतिना कचरा एवं प्रदूषण पैदा होता है? उस फुटप्रटि के आधार पर वे अपने पर्यावरण की बेहतरी के लयि कदम उठाते हैं।

इस ब्रह्मांड की चेतना है मनुष्य

पृथ्वी दविस के अवसर पर हम सभी को पृथ्वी के प्रहरी बनकर उसे बचाने और आवश्यकतानुरूप उपभोग का संकल्प लेना होगा, तभी हम उसकी लंबी आयु की कामना कर सकते हैं। मनुष्य इस ब्रह्मांड का मस्तष्कि यानी चेतना है। लेकनि हैरानी की बात यह है कइिसके बावजूद हमारी पर्यावरणीय ज़म्मिेदारी स्पष्ट नहीं है। मनुष्य ने न केवल जलवायु चक्रों को बदल दयिा है, बल्कि ब्रह्मांड के जीवति स्वरूप को नष्ट कर इसकी जैवकि लय को अवरुद्ध कर दयिा है। ब्रह्मांड में और कसिी अन्य जीव के पास मनुष्य जैसे वशिषाधकिार नहीं हैं तथा सर्फि मनुष्य ही पृथ्वी को जीवंत रखने में सबसे प्रभावी योगदान कर सकते हैं।

इस वर्ष की थीम ‘प्रजातयिों को संरक्षति करें’

हमने डायनासोर, बड़े दांत वाले हाथी, गद्धि जैसी प्रजातयिों के बारे में कतिाबों में ही पढ़ा है, उन्हें कभी देखा नहीं। इस बात को लेकर वशिषज्ञ चतिति हैं कि प्रकृतमिें हो रहे बदलाव के चलते मनुष्य की आने वाली पीढ़ियाँ तेज़ी से वलिुप्त होने के कगार पर खड़ी कई प्रजातयिों के बारे में कतिाबों में पढ़कर न जाने। इसी को ध्यान में रखते हुए इस बार वशि्व पृथ्वी दविस की थीम **प्रजातयिों को संरक्षति करें** रखी गई। आज दुनयिाभर में हज़ारों कसि्म के पक्षी, स्तनधारी और कीट-पतंगे या तो वलिुप्त हो चुके हैं या फरि वलिुप्त होने की कगार पर हैं।

कीट-पतंगे संकट में

वैज्ञानकिों का मानना है कि **छठे वशिाल तरीके** (Sixth Extinction or Anthropocene Extinction) से प्रजातयिों के लुप्त होने की प्रक्रयिा शुरू हो चुकी है। हाल ही में आई एक रपिोर्ट के अनुसार, मधुमक्खयिाँ, चींटयिाँ, गुबरैले (बीटल), मकड़ी, जुगनू जैसे कीट जो हमारे जीवन का अभन्नि अंग हैं, अन्य स्तनधारी जीवों, पक्षयिों और सरीसृपों की तुलना में आठ गुना तेज़ी से वलिुप्त हो रहे हैं। इस रपिोर्ट में पछिले 13 वर्षों में दुनयिा के वभिन्नि हस्सिों में प्रकाशति 73 शोधों की समीक्षा की गई है। इसमें शोधकर्त्ताओं ने पाया कि सभी जगहों पर इनकी संख्या में कमी आने के कारण अगले कुछ दशकों में 40 प्रतशित कीट वलिुप्त हो जाएंगे। कीटों की संख्या हर साल ढाई प्रतशित की दर से कम हो रही है। कीट-पतंगों का कम होना पारस्थितिकिी तंत्र के लयि घातक है, क्योंकि **पारस्थितिकिी तंत्र** और खाद्य श्रृंखला के संतुलन के लयि कीट-पतंगों का होना बहुत ज़रूरी है।

जलवायु परविर्तन, वनों की कटाई, बढ़ते कंक्रीट के जंगल, शहरीकरण, अवैध शकिार और खेती-बाड़ी में कीटनाशक दवाओं का इस्तेमाल, समुद्र में व्याप्त प्लास्टकि प्रदूषण इन प्रजातयिों के लुप्त होने के लयि ज़म्मिेदार हैं। अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN) ने वलिुप्त होने की कगार पर खड़े जीव-जंतुओं की जो सूची जारी की है, उसके अनुसार, 26,500 से अधकि प्रजातयिों के वलिुप्त होने का खतरा है, जनिमें 40% उभयचर, 34% शंकुधारी, 33% कोरल रीफ, 25% स्तनधारी और 14% पक्षी हैं।

आज वशि्व में हर जगह प्रकृति का दोहन जारी है तथा इसके दोहन और प्रदूषण की वज़ह से वशि्व स्तर पर लोगों की चतिा सामने आना शुरू हुई है। आज जलवायु परविर्तन पृथ्वी के लयि सबसे बड़ा संकट का कारण बन गया है। यदि पृथ्वी के अस्तत्वि पर ही प्रश्नचह्नि लग जाएगा तो इसकी बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। इस वशि्व पृथ्वी दविस पर संकल्प लेना चाहयि कहिम पृथ्वी और उसके वातावरण को बचाने का प्रयास करेंगे।

अभ्यास प्रश्न: प्रकृति के अंधाधुंध दोहन को रोकने के लयि पृथ्वी दविस आदि जैसे आयोजनों के प्रयास कतिने कारगर हैं?

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/earth-day-to-take-care-mother-earth